अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

कोच्चि को पावन बना महातपस्वी ने गतिमान किए ज्योतिचरण

-त्रिदिवसीय प्रवास में आचार्यश्री ने लोगों को पढ़ाया आध्यात्मिकता का पाठ

-लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे अरूर

-अवर लेडी आॅफ मर्सी आई.सी.एस.ई. स्कूल से आचार्यश्री ने दिए सरलता के सूत्र

04.03.2019 अरूर, एर्नाकुलम (केरल): मसाले के मुख्य व्यापार केन्द्र, दक्षिण भारत के प्रमुख बन्दरगाह और वैश्विक व्यापार के महत्त्वपूर्ण केन्द्र कोच्चि में कुल त्रिदिवसीय प्रवास कर जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, मानवता के मसीहा, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अध्यात्म की ऐसी ज्योति जलाई है, जिसके प्रकाश से जन-जन का मन वर्षों तक ज्योतित होता रहेगा और जीवन के परिणामों को बदलने वाला साबित होगा। तीन दिनों तक आध्यात्मिक मंगल प्रेरणा और पाथेय प्रदान करने के उपरान्त सोमवार को प्रातः की मंगल बेला में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अहिंसा यात्रा व उपस्थित धवल रश्मियों के साथ राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम से मंगल प्रस्थान किया। रास्ते में अनेक दर्शनार्थियों को पावन आशीष प्राप्त करते हुए गंतव्य की ओर गतिमान हुए। कोच्चि से अब कन्याकुमारी ओर प्रस्थित आचार्यश्री अपनी नगर की सीमा के बाहर भी नहीं हुए थे कि एक जलमार्ग पर बने पुल को आचार्यश्री ने अपने चरणकमल से पावन किया। दरअसल यह जलमार्ग ही के माध्यम से ही सामानों से भरे जहाज और क्रूज शहर के मध्य पहुंचते हैं। इन जलमार्गों के दोनों ओर खड़े हरे-भरे वृक्षों, ऊंची इमारतों के साथ जल-जल में स्थान-स्थान पर खड़े जहाज और बोट आदि की उपस्थिति एक सुन्दर दृश्य उपस्थित कर रहे थे। इसी तरह एक और जलमार्ग पर बने पुल से आचार्यश्री आगे पधारे। लगभग तेरह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री कोच्चि शहर से अरूर स्थित अवर लेडी आॅफ मर्सी आई.सी.एस.ई./आई.एस.सी. स्कूल परिसर में पधारे।

स्कूल परिसर में आयोजित प्रातः के मंगल प्रवचन में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में सरलता हो तो शुद्धि की बात हो सकती है। जो ऋजुभूत होता है, उसकी शुद्धि हो सकती है। ऋजुभूत की आत्मा शुद्ध हो सकती है, किन्तु छल, कपट और माया करने वाली शुद्धि नहीं हो सकती। जो छल, कपट और झूठ का सहारा लेने वाला होता है, उसकी आत्मा मलिन बनी रहती है। किसी अपेक्षा से बच्चों जैसी सरलता वांछनीय मानी गई है। जिस प्रकार एक बालक से कोई गलती हो जाए तो वह निःसंकोच अपने मां-बाप को बता देता है, वैसी कोई गलती अथवा प्रमाद हो जाए तो आदमी को सरलमना बता देने और उसका प्रायश्चित्त करने से आदमी की आत्मा शुद्ध बन सकती है। साध्य के लिए साधन शुद्ध होना चाहिए। सरलता और ईमानदारी का संबंध होता है। ईमानदारी से कमाया हुआ लाख रुपया बेईमानी से कमाए गए करोड़ों रुपए से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है। अशुद्ध साधनों से से कमाया हुआ पैसा अच्छा नहीं होता। जहां सरलता हो, वहां हृदय की शुद्धता हो सकती है। जो हृदय शुद्ध होता है, उसमें धर्म ठहरता है। जिस आत्मा में धर्म का ठहराव हो, वह आत्मा कभी मोक्ष को भी प्राप्त हो सकती है। आदमी को ठगी करने से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अपने जीवन में सरलता और ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने मंगल प्रवचन के उपरान्त स्कूल के लिए अंग्रेजी भाषा में पावन आशीष प्रदान किया। आचार्यश्री के आगमन से हर्षित स्कूल की प्रिंसिपल सिस्टर विजयाकुमारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।